KASHMIR FLOWER

CONTAINING

A SHORT HISTORY OF KASHMIR,

A GENEALOGICAL TABLE OF RAJAS

WITH DATES, &c., SRI HARŚA,

A REVIEW OF KALHANA'S RAJATARANGINI,

AND A SHORT HISTORY

OF THE

PRESENT JAMBOO RAJ FAMILY,

BY

HARIŚCHANDRA.

BENARES:
PUBLISHED BY MALLIKACHANDRA AND CO., CITY BENARES.
PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS.

1884.

काश्मीर कुसुम

अथवा

राजतरंगिणी कमल

(कश्मीर का संक्षिप्त इतिहास, राजाओं के नाम और समय का सविस्तर चक्र, राजतरंगिणी की समालोचना, श्रीहर्ष और वर्तमान महाराज कश्मीर के बंश का छोटा इतिहास)

श्रीहरिश्चन्द्र लिखित

'कोऽन्यः कालमतिक्रान्तं नेतुं प्रत्यक्षतां क्षमः ।
कवीन् प्रजापतींस्त्यक्त्वा रम्यनिर्माणशालिनः' ॥
'भुजतरुवनच्छायां येषां निषेव्य महौजसां ।
जलधिरसनामेदिन्यासीदसावकुतोभया ॥
स्मृतिमपि न ते यान्ति क्ष्मापा विना यदनुग्रहं ।
प्रकृतिमहते कुर्मस्तस्मै नमः कविकर्मणे' ॥

बनारस

मेडिकल हाल के छापेख़ाने में छापा गया ।

सन् १८८४ ई० ।
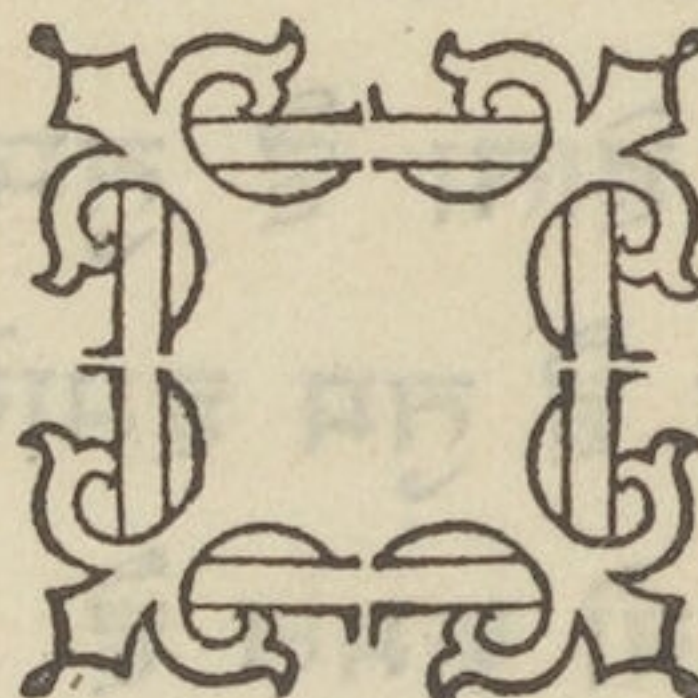
PRINTED BY E. J. LAZARUS & CO.,
AT THE MEDICAL HALL PRESS, BENARES.

॥ भूमिका ॥

भारतवर्ष के निर्मल आकाश में इतिहास चन्द्रमा का दर्शन नहीं होता क्योंकि भारतवर्ष की प्राचीन विद्याओं के साथ इतिहास का भी लोप हो गया। कुछ तो पूर्व समय में शृंखलाबद्ध इतिहास लिखने की चाल ही न थी और जो कुछ बचा बचाया था वह भी कराल काल के गाल में चला गया। जैनों ने वैदिकों के ग्रन्थ नाश किए और वैदिकों ने जैनों के। एक राजधानी में एक वंश राज्य करता था जब दूसरे वंश ने उस को जीता तो पहले वंश की सम्पूर्ण वंशावली के ग्रन्थ जला दिए। कवियों ने अपने अन्नदाता के वंश की तो झूठी प्रशंसा की कहानी जोड़ लीं और उनके जो शत्रु थे उनकी सब कीर्त्ति लोप कर दीं। यह सब तो था ही अन्त में मुसल्मानों ने आकर जो कुछ बचे बचाए ग्रन्थ थे जला दिए। चलिए छुट्टी हुई। ऐसी काली घटा छाई कि भारतवर्ष के कीर्त्ति-चन्द्रमा का प्रकाश ही छिप गया। हरिश्चन्द्र, राम, युधिष्ठिर ऐसे महानुभावों की कीर्त्ति का प्रकाश अति उत्कट था इसी से घनपटल को वेध कर अब तक हम लोगों के अंधेरे दृश्य को आलोक पहुंचाता है। किन्तु ब्रह्मा से लेकर आज तक और जितने बड़े बड़े राजा या बीर या पण्डित या महानुभाव हुए किसी का समाचार ठीक ठीक नहीं मिलता। पुराणादिकों में नाम मिलता है तो समय नहीं मिलता।

ऐसे अंधेरे में कश्मीर के राजाओं के इतिहास का एक तारा जो हम लोगों को दिखलाई पड़ता है इसी को हम कई सूर्य से बढ़कर समझते हैं। सिद्धान्त यह कि भारतवर्ष में यही एक देश है जिस का इतिहास शृंखलाबद्ध देखने में आता है और यही कारण है कि इस इतिहास पर हमारा ऐसा आदर और आग्रह है।

कश्मीर के इतिहास में कल्हण कवि की राजतरंगिणी ही मुख्य है। यद्यपि कल्हण के पहले सुव्रत क्षेमेन्द्र हेलाराज नीलमुनि पद्ममिहिर और श्री छविल्लभट्ट आदि ग्रन्थकार हुए हैं किन्तु किसी के ग्रन्थ अब नहीं मिलते। कल्हण ने लिखा है कि हेलाराज ने बारह हजार ग्रन्थ कश्मीर के राजाओं

के वर्णन के एकत्र किए थे । नीलमुनि ने इस इतिहास में एक बड़ा सा पुराण ही बनाया था किन्तु हाय! अब वे ग्रन्थ कहीं नहीं मिलते । कश्मीर के बचे बचाए जितने ग्रन्थ थे सब दुष्टों ने जला दिए । आर्यों की मन्दिर मूर्ति आदि मे कारीगरी, कीर्तिस्तम्भादिकों के लेख और पुस्तकों का इन दुष्टों के हाथ से समूल नाश हो गया । परशुराम जी ने राजाओं का शरीरमात्र नाश किया किन्तु इन्हों ने देह बल विद्या धन प्राण की कौन कहै कीर्ति का भी नाश कर दिया ।

कल्हण ने जयसिंह के काल में सन ११४८ ई॰ में राजतरंगिणी बनाई । यह कश्मीर के अमात्य चम्पक का पुत्र था और इसी कारण से इस को इस ग्रन्थ के बनाने में बहुत सा विषय सहज ही में मिला था ।

इसके पीछे जोन राज ने १४१२ में राजावली बनाकर कल्हण से लेकर अपने काल तक के राजाओं का उस में वर्णन किया । फिर उसके शिष्य श्री बरराज ने १४७७ में एक ग्रन्थ और बनाया । अकबर के समय में प्राज्यभट्ट ने इस इतिहास का चतुर्थ खंड लिखा । इस प्रकार चार खंडों में यह कश्मीर का इतिहास संस्कृत में श्लोकबद्ध विद्यमान है ।

महाराज रनजीत सिंह के काल में जान मैकफेयर नामक एक यूरोपीय विद्वान ने कश्मीर से पहिले पहल इस ग्रन्थ का संग्रह किया । विल्सन साहब ने एशियाटिक रिसर्चेज़ में इसके प्रथम छ सर्ग का अनुवाद भी किया था ।

इसी राजतरंगिणी ही से यह इतिहास मैंने लिखा है । इस में केवल राजाओं के समय और बड़ी बड़ी घटनाओं का बर्णन है । आशा है कि कोई इस को सविस्तर भी निर्माण करके प्रकाश करैगा ।

राजतरंगिणी छोड़ कर और और भी कई ग्रन्थों और लेखों से इस में संग्रह किया है । यथा आइने अकबरी, ... का फारसी इतिहास, एशियाटिक सोसाइटी के पत्र; विल्सन, विल्फर्ड, प्रिंसिप, कनिंगहम, टाड, विलिअमस्, गोशेन और ट्रायर आदि के लेख, बाबू जोगेशचन्द्रदत्त की अङ्गरेज़ी तवारीख़, दीवानकृपाराम जी की फारसी तवारीख़ आदि ।

बहुतों का मत है कि कश्मीर शब्द कश्यपमेरु का अपभ्रंश है। पहले पहल कश्यप मुनि ने अपने तपोबल से इस प्रदेश का पानी सुखा कर इस को बसाया था। इन के पीछे गोनर्द तक अर्थात् कलियुग के प्रारम्भ तक राजाओं का कुछ पता नहीं है। गोनर्द से ही राजाओं का नाम शृंखलाबद्ध मिलता है। मुसल्मान लेखकों ने इस के पूर्व के भी कई नाम लिखे हैं किन्तु वे सब ऐसे अशुद्ध और प्रति शब्द में खां उपाधि विशिष्ट हैं कि उन नामों पर श्रद्धा नहीं होती।

गोनर्द से लेकर सहदेव तक पूर्व में सैंतीस सौ बरस के लगभग डेढ़ सौ हिन्दू राजाओं ने कश्मीर भोगा फिर पूरे पाँच सौ बरस मुसल्मानों ने इस का उत्पीड़न किया। (बीच में बागी हो कर यद्यपि राजा सुखजीवन ने ८ बरस राज्य किया था पर उस की कोई गिनती नहीं) फिर नाममात्र को कश्मीर दुरस्तानी राज्यभुक्त होकर आज चौंसठ बरस से फिर हिन्दुओं के अधिकार में आया है। अब ईश्वर सर्वदा इस को उपद्रवों से बचावे। एवमस्तु।

कश्मीर के वर्त्तमान महाराज की संक्षिप्त वंशपरम्परा यों है। ये लोग कछवाहे क्षत्री हैं। जैपुरप्रान्त से सूर्यदेव नामक एक राजकुमार ने आकर जम्बू में राज्य का आरम्भ किया। उसके वंश में भुजदेव, अवतारदेव, यशदेव, कृपालुदेव, चक्रदेव, विजयदेव, नृसिंहदेव, अर्जुनदेव और जयदेव ये क्रम से हुए। जयदेव का पुत्र मालदेव बड़ा बली और पराक्रमी हुआ। इसने हंसी हंसी में पचास पचास मन के जो पत्थर उठाए हैं वह उसकी अचल कीर्त्ति बन कर अब भी जम्बू में पड़े हैं। उसके पीछे हम्बीर देव, अजेव्यदेव, वीरदेव, घोगड़देव, कर्पूरदेव और सुमहलदेव क्रम से राजा हुए। सुमहलदेव के पुत्र संग्रामदेव ने फिर बड़ा नाम किया। आलमगीर इन की वीरता से ऐसा प्रसन्न हुआ कि महाराजगी का पद छत्र चंवर सब कुछ दिया। ये दक्षिण की लड़ाई में मारे गए। इनके पुत्र हरिदेव ने और उनके पुत्र गजसिंह ने राज्य को बहुत ही बसाया। सब प्रकार के नियम बांधे और महल बनवाए। गजसिंह के पुत्र ध्रुवदेव ने बहुत दिन तक ऐश्वर्य पूर्वक राज्य किया। ध्रुवदेव के रणजीतदेव और सूरतसिंह पुत्र थे। रणजीतदेव को व्रजराजदेव और उन को निज परम्परा सम्पूर्ण कारी सम्पूर्णदेव हुए।

सम्पूर्णदेव को सन्तति न होने के कारण रणजीतदेव के दूसरे पुत्र दलेलसिंह के पुत्र जैतसिंह ने राज्य पाया। महाराज रणजीतसिंह लाहोरवाले के प्रताप के समय में जैतसिंह को पिनशिन मिली और जम्बू का राज्य लाहोर में मिल गया। जैतसिंह के पुत्र रघुवीरदेव के पुत्र पौत्र अब अम्बाले में हैं और सर्कार अङ्गरेज़ से पिनशिन पाते हैं। ध्रुवदेव के दूसरे पुत्र सूरतसिंह को ज़ोरावरसिंह और मियां मोटासिंह दो पुत्र थे। मियां मोटा को विभूतिसिंह और उन को एक पुत्र व्रजदेव हैं जिन को वर्त्तमान महाराज जम्बू ने क़ैद कर रक्खा है। ज़ोरावरसिंह को किशोरसिंह और उन को तीन पुत्र हुए, गुलाबसिंह, सुचेतसिंह और ध्यानसिंह। महाराज गुलाबसिंह ने महाराजाधिराज रणजीतसिंह से जम्बू का राज्य फिर पाया। सुचेतसिंह का वंश नहीं रहा। राजा ध्यानसिंह को हीरासिंह जवाहरसिंह और मोतीसिंह हुए जिन में राजा मोतीसिंह का वंश है। महाराज गुलाबसिंह के उद्दवसिंह रणधीरसिंह और रणवीरसिंह तीन पुत्र हुए। प्रथम दोनों नौनिहालसिंह और राजा हीरासिंह के साथ क्रम से मर गए इस से महाराज रणवीरसिंह वर्त्तमान जम्बू और कश्मीर के महाराज ने राज्य पाया। इन के एक वैमात्रेय भाई मियां हठुसिंह हैं जिन को महाराज ने क़ैद कर रक्खा था पर सुनते हैं कि आज कल वह क़ैद से निकल कर नैपाल प्रान्त में चले गए हैं। सन् १८६१ में महाराज को जी· सी· एस· आई· का पद सर्कार ने दिया और १८६२ में दत्तक लेने का आज्ञापत्र भी दिया। इन को २१ तोप की सलामी है। दिल्ली दरबार में इनको और भी अनेक आदरसूचक पद मिले हैं। ये संस्कृत विद्या और धर्म के अनुरागी हैं। इन को तीन पुत्र हैं यथा युवराज प्रतापसिंह, कुमार रामसिंह और कुमार अमरसिंह *।

---

* वर्त्तमान महाराज के पारिषदवर्ग भी उत्तम हैं। इनके एक बड़े शुभ चिन्तक पंडित रामकृष्ण जी को कई वर्ष हुए लोगों ने षड्चक्र करके राज्य से अलग करदिया था और अब उनके पुत्र पंडित रघुनाथ जी काशी में रहते हैं। महाराज के अमात्य दीवान ज्वाला सहाय के पौत्र दीवान कृपाराम के पुत्र दीवान अनन्तराम जी हैं· जो अङ्गरेज़ी फ़ारसी आदि पढ़े और सुचतुर हैं। बाबू नीलाम्बर मुकुर्जी, बाबू गणेशचौबे प्रभृति और भी कई चतुर लोग राज्यकार्य मे दक्ष हैं।

राजतरंगिणी की समालोचना ।

जिस महाग्रन्थ के कारण हम लोग आज दिन कश्मीर का इतिहास प्रत्यक्ष करते हैं उस के विषय में भी कुछ कहना यहां बहुत आवश्यक है । इस ग्रन्थ को कल्हण कवि ने शाके एक हजार सत्तर १०७० में बनाया था उस समय तीसरे गोनर्द से तेईस सौ तीस बरस बीत चुके थे । इस ग्रन्थ की संस्कृत क्लिष्ट और एक विचित्र शैली की है । कवि के स्वभाव का जहां तक परिचय मिला है ऐसा जाना जाता है कि वह उद्धत और अभिमानी था किन्तु साथ ही यह भी है कि उसकी गवेषणा अत्यन्त गम्भीर थी । नीलपुराण छोड़ कर ग्यारह प्राचीन ग्रन्थ इसने इतिहास के देखे थे । केवल इन्हीं ग्रन्थों के भरोसे इसने यह ग्रन्थ नहीं बनाया वरंच आजकल के पुरातत्ववेत्ता (Antiquarians) की भांति प्राचीन राजाओं के शासन पत्र दानपत्र तथा शिवालय आदि की लिपि भी इसने देखी थीं । (प्रथम तरंग १५ श्लोक देखो)। यह मंत्री का पुत्र था इस से सम्भव है कि इन वस्तुओं को देखने में इस को इतना परिश्रम न पड़ा होगा जितना यदि कोई साधारण कवि बनाता तो उसको पड़ता । इस ग्रन्थ में आठ हजार श्लोक हैं । साढ़े छ सौ बरस कलियुग बीते कौरव पांडवों का युद्ध हुआ था यह बात इसी ने प्रचलित की है । जरासन्ध के युद्ध में कश्मीर का पहला राजा गोनर्द मारा गया यहां से कथा का आरम्भ है । इसी आदि गोनर्द के पुत्र को श्रीकृष्ण ने गान्धार देश के स्वयम्बर में मारा और उसकी सगर्भा रानी को राज्य पर बैठाया । उस समय श्रीकृष्ण ने कश्मीर की महिमा में एक पुराण का श्लोक कहा । (१ त० ३२ श्लो) यही प्रकरण इस बात का प्रमाण है कि कश्मीर का राज्य बहुत दिन से प्रतिष्ठित है । इस रानी के पुत्र का नाम द्वितीय गोनर्द हुआ जो महाभारत के युद्ध में मारा गया । इसी से स्पष्ट है कि पूर्वोक्त तीनों राजा जवानी ही में मरे क्योंकि एक पांडवों के काल में तीनों का वर्णन आया है । इन लोगों के अनेक काल पीछे अशोक राजा जैनी हुआ । इसी ने श्रीनगर बसाया । इस के पीछे

जलौक राजा प्रतापी हुआ जिस ने कान्यकुब्जादि देश जीता। यह शैव था। (भारतवर्ष में मूर्तिपूजा और शैव वैष्णवादि मत बहुत ही थोड़े काल से चले हैं यह कहने वाले महात्मागण इस प्रसंग को आंख खोलकर पढ़ें (१ त· ११३ श्लो·) फिर हुष्क जुष्क और कनिष्क ये तीन विदेशी (Bactro-Indian tribe) राजा हुए। इनके समय में शाक्य सिंह को हुए डेढ़ सौ बरस हुए थे। (१ त· १७२ श्लो·) इस से स्पष्ट होता है कि राजतरंगिणी के हिसाब से शाक्यसिंह को हुए पचीस सौ बरस हुए। इसी समय में नागार्जुन नामक सिद्ध भी हुआ। इनके पीछे अभिमन्यु के समय में चन्द्राचार्य ने व्याकरण के महाभाष्य का प्रचार किया और एक दूसरे चन्द्रदेव ने बौद्धों को जीता। कुछ काल पीछे मिहिर कुल नामक एक राजा हुआ। इस के समय की एक घटना विचारने के योग्य है। वह यह कि इस की रानी सिंहल का बना रेशमी कपड़ा पहने थी उस पर वहां के राजा के पैर की सोनहली छाप थी। इस पर कश्मीर के राजा ने बड़ा क्रोध किया और लंका जीतने चला। तब लंकावालों ने 'यमुषदेव' नामक सूर्य के बिम्ब के छापे का कपड़ा देकर उस से मेल किया। (१ त· ३०० श्लो·) इस से स्पष्ट होता है कि चांदी सोने से कपड़ा छापना लंका में तभी से प्रचलित था। अद्यापि दक्षिण हैदराबाद में (लंका के समीप) छापा अच्छा होता है। उस समय तक भाट्ट (Bhatti) दारद (Dardareans) और गान्धार (Kandharians) ब्राह्मणहोते थे।

फिर तुंजीन नामक राजा के समय में चन्द्रक कवि ने नाटक बनाया (२ त· १६ श्लो·) इस के समय में एक बात और आश्चर्य्य की लिखी है कि एक समय बड़ा काल पड़ा था तो परमेश्वर ने कबूतर बरसाए थे। (२ त· ५१ श्लो·) और हर्ष नामक एक कोई और राजा उस काल में हुआ था। इस राजा के कुछ काल पीछे सन्धिमान राजा की कथा भी बड़ी आश्चर्य की लिखी है कि वह सूली दिया गया था और फिर जी गया इत्यादि। विक्रमादित्य के मरने के थोड़े ही समय पीछे प्रबरसेन राजा ने नाव का पुल बांधा और वह ललाट में तृशूल की भांति तिलक देता था। (३ त· ३५६ और ३६७ श्लो·)

जयापीड़ राजा का समय फिर ध्यान देने योग्य है। क्योंकि इसके समय में कई पंडित हुए हैं। जिन में शंकु नामक कवि ने मम्म

श्रीर उत्पल की लड़ाई में भुवनाभ्युदय नामक काव्य बनाया था। (४ त॰ २५ श्लो॰) इसी के समय में वामन नामक वैयाकरण पंडित हुआ है जिस की कारिका प्रसिद्ध है। (४ त॰ ४८७ से ४९४ श्लो॰ तक)। इसी वामन का बोपदेव ने खंडन किया है (बोपदेव महाग्राहग्रस्तो वामन कुंजरः) इस से बोपदेव जयापीड़ के समय (७५. ई॰) के पीछे हुए हैं यह सिद्ध होता है। जयापीड़ ने द्वारका फिर से बसाकर मंदिर बनवाए। (४ त॰ ५६० श्लो॰) श्रीर उस समय नैपाल का राजा अरमुड़ि था। (४ त॰ ५२९ श्लो॰)

राजा शंकरबर्मा का समय भी दृष्टि देने के योग्य है। इस के पास ३०० हाथी लाख घोड़े श्रीर नौ लाख प्यादे थे। उस समय गुजरात में 'खानाल खान' का जोर था। दरद श्रीर तुरुष्क देश के राजा भारत में बड़ा उपद्रव मचाए हुए थे। लल्लियशाह खानालखान का सर्दार था। (५ त॰ १५३ से १६॰ श्लो॰ तक) इस ग्रन्थ में मुसल्मानों का वर्णन पहले यहीं आया है। इस से स्पष्ट होता है कि ईसवी नवीं शताब्दी के अन्त तक जो मुसल्मान चढ़ाई करते थे वे गुजरात की राह से करते थे उत्तर पच्छिम की राह नहीं खुली थी। इस तरंग में कायस्थों की बड़ी निन्दा की है। (४ त॰ ६२५ श्लो॰ से श्रीर ५ त॰ १७९ श्लो॰ आदि)

चतुर्थ श्रीर पंचम तरंग में कई बात श्रीर भी दृष्टि देने के योग्य हैं। जैसे तांबे की 'दीनार' पर राजाओं का नाम खुदा रहना। (४ त॰ ६२० श्लो॰) जहां पथिक टिकें उस स्थान का नाम गंज (४ त॰ ५९२ श्लो॰) रुपयों की हुंडिका (हुंडी) का प्रचार। (५ त॰ १५९ श्लो॰) मेष के ताज़े चमड़े पर खड़े होकर तलवार ढाल हाथ में लेकर शपथ खाना इत्यादि। (५ त॰ ३३० श्लो॰) इसी तरंग में गानेवालों का नाम डोम लिखा है। (५ त॰ ३५८ श्लो॰) यह दीनार गंज हुंडी श्रीर डोम शब्द अब तक भाषा में प्रचलित हैं बरंच मीरहसन ने भी 'बडोमनपना' लिखा है। जैसा इस काल में रंडी श्रीर उनकी बुढ़िया तथा भडुओं के समझने की श्रीर साधारण लोग जिस में न समझें *, ऐसी एक भाषा

* वर्त्तमान काल में रंडियों की भाषा का कुछ उदाहरण दिखाते हैं। नगर की बारवधूगण की संकेत भाषा–यथा–लूरा–पुरुष, लूरी–रंडी, चीसा–अच्छा, बीला–बुरा, झोमटा रुपया, आदि। ग्राम्य रंडियों की भाषा यथा–सेरुआ–पुरुष, सेरुई–स्त्री, कनेरी–रुपया, सेमिल–अच्छा है श्रीर छोलिआयल्यः अर्थात् रुपया सब ठगलो।

प्रचलित है वैसीही उस काल में भी थी । गानेवाले को हेलू गांव दिया गया इस की उस काल की भाषा हुई 'रंगस्सहल्लुदिगणा' (५ त॰ ४०२ श्लो॰)

षष्ठतरंग में दिद्दारानी का उपद्रव और बहुत से राजाओं के नाम के पूर्व में शाहि पद ध्यान देने के योग्य है ।

सप्तम तरंग (५३ श्लो॰) में हम्मीर नाम का एक राजा तुंग के समय में और (१९० श्लो॰) अनन्त के समय में भोज का राजा होना लिखा है । मान के हेतु लोगों को ठाकुर की पदवी दी जाती थी। (७ त॰ २९॰ श्लो) तुरुष्क देश से सोने का मुलम्मा करने की विद्या हर्ष के समय में आई। (७ त॰ ५३॰ श्लो॰) इसी के काल में खस लोगों ने पहले पहल बन्दूक का युद्ध किया (७ त॰ ९८४ श्लो॰) कलिंजर के राजा, राजा उदयसिंह आदि कई राजाओं के प्रसंग से (१३०० श्लो॰ के आसपास) नाम आए हैं । युद्ध हारने के समय क्षत्रानियां राजपुताने की भांति यहां भी जल जाती थीं । (७ त॰ १५०० श्लो॰)

अष्टमतरंग में भी कायस्थों की बहुत निन्दा की है । (८ त॰ ८९ श्लो॰ आदि) कैदियों को भांग से रंग कर कपड़ा पहनाते थे । (८ त॰ ९३॰ श्लो॰) कल्याण के हेतु लोग भीष्मस्तवराज, गजेन्द्रमोक्ष, दुर्गापाठ आदि का पाठ करते थे। (त॰ १०६ श्लो॰) टकसाल का नाम टंकशाला॰ (८ त॰ १५२ श्लो॰) उस समय में भी राजाओं को इस बात का आग्रह होता था कि उन्हीं के नाम के सिक्के का प्रचार विशेष हो। इस समय (बारवीं शताब्दी के मध्य में) कालिंजर का राजा कल्ह था। (८ त॰ २०५ श्लो॰) कटार को कट्टार कहते थे । (८ त॰ ५१५ श्लो॰) हर्ष का सिर काट कर लोगों ने भाले पर चढ़ाया किन्तु इस के पहले किसी राजा के सिर काटने की चाल नहीं थी । हर्ष का व्याख्यान इस तरंग में अवश्य पढ़ने के योग्य है जिस से शृंगार वीर आदि रसों का हृदय में उदय होकर अन्त में बैराग्य आता है ।

राजतरंगिणी में रामलक्ष्मण की मूर्त्ति का पृथ्वी के भीतर से निकलना इस बात का प्रमाण है कि मूर्त्ति पूजा यहां बहुत दिन सेप्रचलित है।

इस में देवी, देवता, भूत, प्रेत और नागों की अनेक प्रकार की आश्चर्य कथा हैं जिनको ग्रंथ बढने के भय से यहां नहीं लिखा । और

भी वृक्ष, शस्त्र, औषधि और मणि आदिकों के अनेक प्रकार के वर्णन हैं। कोई महात्मा इसका पूरा अनुबाद करेंगे तो साधारण पाठकों को इस का पूर्ण आनन्द मिलेगा।

इसमें एक मणि का वर्णन बड़ा आश्चर्यजनक है। एक बेर राजा नदी पार होना चाहता था किन्तु कोई सामान उस समय नहीं था। एक सिद्ध मनुष्य ने जल में एक मणि फेंक दी उस से जल फट गया और सैना पार उतर गई। फिर दूसरी मणि के बल से इस मणि को उठा लिया। एक कहानी ऐसी और भी प्रसिद्ध है कि किसी राजा की अंगूठी पानी में गिर पड़ी। राजा को उस अमूल्य रत्न का बड़ा शोच हुआ यह देखकर मंत्री ने अपनी अंगूठी डोरे में बांध कर पानी में डाली। मंत्री के अंगूठी के रत्न में ऐसी शक्ति थी कि अन्य रत्नों को वह खींच लेती थी इस से राजा की अंगूठी मिल गई।

हर्षदेव

हर्षदेव के विषय में यद्यपि राजतरंगिणी में कुछ विशेष नहीं लिखा है किन्तु इस राजा का नाम भारतवर्ष में बहुत प्रसिद्ध है और एक इस बात की प्रसिद्धि पर कि रत्नावली इत्यादि काव्यग्रंथ उस के समय में बने थे इस राजा पर मेरी विशेष दृष्टि पड़ी। इस का समय विक्रम और कालिदास के समय के बहुत पीछे स्पष्ट होने से इस बात की मुझ को बड़ी चिन्ता हुई कि वह कौन पुण्यात्मा श्रीहर्ष है धावक ने जिस की कीर्त्ति आचन्द्रार्क स्थिर रक्खी है। वह श्रीहर्ष निश्चय मम्मट कालिदासादि के पूर्व और वत्सराज के पश्चात् हुआ है। वंशावलियों में खोजने से कई हर्ष मिले। यथा मालवा के राजाओं में एक हर्ष-मेघ १९१ ई॰पू॰ हुआ है। यह युद्ध में मारा गया और कोई विशेष कथा इस की नहीं है। छतरपुर में एक लिपि में श्रीहर्ष नाम का एक राजा बिहल का पुत्र यशोधर्मदेव का पिता लिखा है। और यह लिपि श्री-हर्ष के प्रपौत्र की सं॰ १०१९ की है। एक श्रीहर्ष नेपाल का राजा ३६३१ ई॰पू॰ हुआ है। एक विक्रमादित्य जिस का दूसरा नाम हर्ष था मातृगुप्त के समय में हुआ। शक १००० में एक विक्रम और इस के कुछ ही पूर्व कान्यकुब्ज में एक हर्ष नामक राजा हुआ। कालिदास और श्रीहर्ष कवि भी इसी काल में थे। जैन लोगों ने लिखा है कि वाराणसी के जयन्तीचन्द्र नामक राजा के दरबार में श्रीहर्ष कवि था। (१०८९ शक)। यह जैनों का भ्रम है। और हर्षों को छोड़ कर कान्यकुब्ज के हर्ष को यदि धावक कवि का स्वामी मानैं तभी कुछ लड़ सब बातों की मिलैगी। जैसा रत्नावली में जिस वत्सराज का चरित है वह कलियुग के प्रारंभ में उरुक्षेप का पुत्र वत्स था। शुनकवंश का प्रथम राजा एक प्रद्योत हुआ है। (३००० ई॰पू॰) सम्भव है कि इसी प्रद्योत की बेटी वत्स को व्याही हो। धावक ने एक उदयन का भी वर्णन किया है वह पांडवों के वंश की अन्तावस्था में हुआ था। यह सब अति प्राचीन हैं। इस से ३६३१ ई॰ पू॰ के नेपालवाले श्रीहर्ष के हेतु धावक ने काव्य बनाया है यह नहीं हो सकता। कन्नौज में जो श्रीहर्ष नामक राजा था जिस की सभा में श्री-

हर्ष कवि का पिता रहता था वही श्री हर्ष धावक का स्वामी था। छतरपुर की लिपि का काल १०१९ है। चार पुश्त पहले यह काल ८५० संवत में जा पड़ेगा। यशोविग्रह के पहले कदाचित् कुछ राजविप्लव हुआ हो और श्रीहर्ष से यशोविग्रह तक दो एक राजे और हो गए हों तो आश्चर्य नहीं। प्रशस्ति के 'क्ष्मापालमालासुदिवंगतासु' इस पद से ऐसा झलकता भी है। यशोविग्रह से लेकर जयचन्द तक नामों में जितनी प्रशस्ति मिली हैं उने में बड़ा ही अन्तर है। जो ताम्रपत्र मैंने देखा है उस का क्रम यह है यशोविग्रह, महीचन्द्र, चन्द्रदेव, मदनपाल, गोविन्दचन्द्र और जयचन्द्र। जैनों ने इसी जयचन्द्र को जयन्तीचन्द्र लिखा है और काशी का राजा लिखने का हेतु यह है कि 'तीर्थानि काशिकुशिकोत्तरकोशलेन्द्र स्थानीयकानि परिपालयताभिगम्य' इस पद से स्पष्ट है कि काशी भी उस समय कन्नोजवालों के अधिकार में थी इसी से काशी का राजा लिखा। और जयचन्द्र के प्रपितामह या उस के भी पिता के काल में जो श्रीहर्ष कवि था उस को जयचन्द्र के काल में लिख दिया। छतरपुर की लिपि में जो श्रीहर्ष राजा का पुत्र यशोधर्म वा वर्म लिखा है वही यशोविग्रह मान लिया जाय और जयचन्द्र उसके बड़े पुत्रका वंश और छतरपुर की लिपिवाले छोटे पुत्र के वंश में हैं ऐसा मान लीजिए तो विरोध मिट जायगा। चन्द्रदेव ने 'श्रीमद्गाधिपुराधिराज्यमखिलं दोर्विक्रमेनार्जितम्' इस पद से कान्यकुब्ज का राज्य अपने बल से पाया यह भी झलकता है। इस से यह भी संभव है कि श्रीहर्ष का राज्य कन्नोज में शेष न रहा हो और चन्द्रदेव ने नए सिर से राज्य लिया हो। यशोविग्रह के वंश की कई शाखा हैं इस का प्रमाण प्रशस्तियों के भिन्न भिन्न नामों ही से है। इससे ऐसा निश्चय होता है कि संबत् ९०० के लगभग जो श्रीहर्ष नामक कान्यकुब्ज का राजा था उसीके हेतु रत्नावली आदि ग्रन्थ बने हैं *। कालिदास, विक्रम, भोज सब इस काल के सौ बरस के आस पास पीछे उत्पन्न हुए हैं और इसी से कालिदास ने मालविकाग्निमित्र में धावक का परिचय दिया है। कल्हण कवि ने जो राजतरंगिणी में कालिदास या इस श्रीहर्ष का नाम नहीं दिया उस का कारण यही है कि कल्हण का स्वभाव असहिष्णु था और कालिदास से कश्मीर के राजा भीमगुप्त से (जो ९७५ ई॰ के काल में राज्य

---

* पूर्व में तुंजीन के काल में एक हर्ष हुआ है यह लिख भी आए हैं।

करता था) महा वैर था इस से उसने कालिदास का या उसके स्वामी विक्रम का नाम नहीं लिखा। कल्हण प्रायः सभी राजाओं की कुछ कुछ निन्दा कर देता है जैसा इसी हर्षदेव की जिस की और स्थानों में बड़ी स्तुति है कल्हण ने निन्दा की है। और ग्रन्थकारों के मत से श्रीहर्ष बड़ा न्यायपरायण स्वयं महाकवि अति उदार था। पुकार सुनने के हेतु महल की भित्तियों पर घंटियां लटकती थीं। रात दिन गुणियों से घिरा रहता था और अन्त में संसार को असार जान कर त्यागी हो गया। कल्हण से हर्षराज से द्वेष का यह कारण है कि इस के स्वामी जयसिंह का बाप सुस्सल हर्ष के पोते भिक्षाचर को मार कर राज्य बैठा था।

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिङ्हम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन।
१	आदि गोनर्द	६८८॥	०	०	१४०० ई॰ पूर्व	३५ । ६	२४४८ ईसवी पूर्व, जरासन्ध के युद्ध में बलदेव जी ने मारा, प्रिन्सिप के मत से १०४५ ई॰ पू॰, नामान्तर गोनन्द वा अंगद, फारसी वालों के मत से राज्य १७ बरस, मुसल्मानों का नामआदिगंद ।
२	दामोदर	७२४	०	०	०	३५ । ६	गन्धार देश के स्वयम्बर में श्रीकृष्ण ने इस को मारा और इसकी यशोवती रानी को जो सगर्भा थी राज्य पर बैठाया ।
३	बालगोनर्द *	७५४	०	०	०	३०	श्रीकृष्ण ने आप आकर राज पर बैठाया॰ महाभारत के युद्ध में विद्यमान था ।
३८	पैंतीस राजे *	१४६४	०	०	०	वि॰ ७१०	इनके नाम कर्म कुछ भी विदित नहीं॰ मुसल्मानों के मत से ये पैंतीस नहीं सैंतीस थे और पांडववंश में थे ।
३९	लव	१४९९	०	०	५७०	३५	लोलूर बसाया। नामान्तर काललव। मुसल्मानों का लू, लोलूर में बीस लाख अस्सी हजार मनुष्यों की बस्ती थी। १७०९ ई॰ पू॰
४०	कुशेशय	१५०२।८	०	०	०	३ । ८	नामान्तर कुश। १६६४ ई॰ पू॰ मुसल्मानों का किशन ।
४१	खगेन्द्र	१५६२।८	०	०	०	६०	१६६० ई॰ पू॰ मुसल्मानों के मत से काकापुर और कथ नामक नगर बसाए । मुसल्मानों का गुलकन्द ।
४२	सुरेन्द्र *	१५९३।२	०	०	०	३० । ६	मुसल्मानों का सुन्दर। १६०० ई॰ पू॰ ईरान से माचास्प नामक हकीम को बुलवाया। ईरान के बादशाह बहमन को जीता।

इस चक्र में राजाओं के नाम पर जहां * ऐसा चिन्ह दिया है वहां समझना चाहिये कि पूर्व वंश समाप्त होकर आगे से नया वंश चला ।

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिंहाम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन।
							निस्संतान मरा। मुसल्मानों के मत से इसकी बेटी बहमन को व्याही थी।
४३	गोधर	१६२८।९	०	०	०	३५।७	१५७३ ई॰ पू॰।
४४	सुबर्ण	१६८८।९	०	०	०	६०	स्वर्णनदी नाम की नदी पहाड़ खोद कर लाया। मुसलमानों का बसरन।
४५	जनक	१६६४।९	०	०	०	६	१४७७ ई॰ पू॰।
४६	शचीनर	१७६५।९	०	०	०	७१	मुसलमानों का संजीनरायन। १४७१ ई॰ पू॰।
४७	अशोक	१८२७।९	०	०	०	६२	१३९४ ई॰ पू॰, यह शचीनर का भतीजा था। श्रीनगर इसी ने बसाया और जैन मत का प्रचार किया। मुसल्मानों ने इस को शकराज वा शकुनी का बेटा लिखा है। उस काल में श्री नगर में छ लाख मनुष्य थे।
४८	जलौक	१८५७।९	०	०	०	३०	जाति विभाग किया। सप्त प्रकृति स्थापन किया। नन्दिपुराण सुना। इसी को और ग्रन्थकारों ने पटने के अशोक का पोता लिखा है। यवनराजा यूथिदेयुस को हराया। अन्तिओकस के साथ सुलहनामा किया। बड़ा प्रतापी था। १३३२ ई॰पू॰, मु॰ का चकवक।
४९	दामोदर द्वितीय*	१८८२।९	०	०	०	२५	१३०२ ई॰ पू॰, शैवमत का प्रचार हुआ।
५२	हुष्क, जुष्क और						

	कनिष्क *	१९४२।९	०	०	०	९०	१२७७ ई॰ पू॰, ये तीनों तुर्क (किंवा तातार) थे किन्तु बौद्ध थे। शाक्यसिंह को १५० बरस हुए थे नागार्जुन सिद्ध इन्ही के समय में हुआ औ बौद्धमत को फैलाया।
५३	अभिमन्यु	१९७७।९	०	०	०	३५	मुसल्मानों का अभिगुन वा अभिबलन। १२१७ ई॰ पू॰, विल्फर्ड के मत से ४२३ ई॰ पू॰, प्रिंसिप के मत से ७३ ई॰ पू॰, बौद्धों का उपद्रव हुआ। हिम बहुत पड़ा॰ चन्द्रदेव ब्राह्मण ने बौद्धों को जीता। नीलपुराण सुना। महाभाष्य का प्रचार हुआ।
५४	गोनर्द (३)	२०१२।९	११८२ ई॰ पूर्व	५३।३ ई॰ सन	११८२ ई॰ पूर्व	३५	प्रिन्सिप के मत से १०८ ई॰ पू॰ मुस्लमानों ने इसका नाम कृष्ण लिखा है। विल्फर्ड के मत से ३८८ ई॰ पू॰ नागपूजा चलाया।
५५	विभीषण	२०५८।३	११४७	९१।९	११४७	४५।६	विल्फर्ड के मत से ३७० ई॰ पू॰ मुसल्मानों के मत से पखनपति नाम राज्य काल ५३।६।७॰
५६	इन्द्रजित्	२०८८।९	१०९३।६	७३।१	१०९६	३०।६	वि॰ ३५२॰ मुसल्मान लेखकों ने इन्द्रजित रावण इन दोनों का राज्य ३६ वर्ष लिखा है।
५७	रावण	२११९।३	१०५८	७३।१	१०६०।६	३०।६	वि॰ ३३४॰ मुसल्मानों ने इसके बेटे बरवाल का नाम और लिखा है और उसका राज्य भी ३५ बरस लिखा है।
५८	विभीषण (२)	२१५४।३	१०२८	८०।८	१०३०।६	३५	वि॰ ३१६, मुसल्मानों ने लिखा है कि यह त्यागी था। इसका नाम पखनपत था यह अजाद राजाका बेटा और बड़ा कवि था। पहले इसका ज्येष्टपुत्र इन्द्रायन गद्दी पर बैठा किन्तु उसके दुष्कर्मों से दुखी होकर लोगों ने उसको मारडाला और इसको गद्दी पर बैठाया।
५९	किन्नर	२१९४	९९२।६	८९।२	९९३	३९।९	वि॰ २९८, नामान्तर नर, बौद्ध था, मुसल्मानों ने इसको बड़ा क्रूर लिखा है और लिखा है कि २ वर्ष मात्र राज्य किया फिर राज्य कुछ दिन शून्य रहा।
६०	सिद्ध	२२५४	९५२।९	९९।२	९५३।३	९०	वि॰ २८०, मुसल्मानों ने लिखा है कि धाय इसको छिपाए हुए थी।

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिंहम के मत से समय	विलसन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन ।
६१	उपल	२२८४।६	८९२ । ९	११४ । २	८९३ । ३	३० । ६	वि॰ २६२, आइने अकबरी में इसका नाम आदित्यवल्लभ लिखा है नामांतर उत्पलाक्ष, मुसल्मानों का गुरुदत्त वा पलाशन। यह आंख का कंजा था ।
६२	हिरण्य	२३२२।१	८६२ । ३	१२१ । ९	८६२ । ९	३७ । ७	वि॰ २४४, नामांतर हिरण्याक्ष । मुसल्मानों का तिरन्य ।
६३	हिरण्यकुल	२३८२।१	८२४ । ८	१३१ । २	८२५ । २	६०	वि॰ २२६, मुसल्मानों का हिरनकुल ।
६४	बसुकुल	२४४२।१	७६४ । ८	१४६ । २	७६५ । २	६०	वि॰ २१८, आईने अकबरी का एविशाक॰ बड़ा विषयी था ।
६५	मिहिरकुल	२५१२।१	७०४ । ८	१६३ । ८	७०५ । २	७०	वि॰ २००, ट्रायर के मत से नाम मुकुल॰ लंका पर चढ़ाई की॰। बड़ा क्रूर था । दारद गान्धरों और भाटियों का प्राबल्य हुआ पहाड़ तोड़ कर हाथियों से ढोंके हटाकर एक नदी निकलवाई । लंका में राजा का पैर छपा कपड़ा होता था । यह ऐसा क्रूर था कि एक बेर हाथी का पहाड़ परसे गिरना उसको अच्छा मालूम हुआ इससे सौ हाथी पहाड़ पर से गिरवा दिए। बहुत सी स्त्रियों को भी इसने मारडाला ।
६६	बक	२५४८।१	६३४ । ८	१७४ । ८	६३५ । २	३६	वि॰ १८२, मुसल्मानों का ज़ंग। इस को एक स्त्री ने बलि दे दिया।
६७	क्षितिनन्दन	२५७८।१	५७१ । ८	१८७ । ८	५७२ । २	३०	वि॰ १६४, क्षितिनन्द वा नन्दन। मुसल्मानों का आनन्दकान्त। इसका बेटा कतानन्द उसको बसुनन्द हुआ ।
६८	बसुनन्द	२६३६।१	५४१ । ८	१९५ । २	५४२ । २	५२	वि॰ १४६, आईने अकबरी का विस्तन्द। कामशास्त्र बनाया ।
६९	नर (२)	२६९०।१	४८४ । ६	२०८ । २	४९०	६०	वि॰ १२८, नामांतर बर। आईने अकबरी का निर ।

७०	अक्ष	२७५०।१	४२६ । ६	२२३ । २	४३०	६०	वि॰ १००, आईने अकबरी का अज। मुसल्मान इतिहास लेखके ने इस का नाम लिखाही नहीं है।
७१	गोपादित्य	२८१०।१	३६६ । ६	२३८ । २	३७०	६०	वि॰ ८२ ई॰ पू॰, आ॰ अ॰ का कुलवती। मुसल्मानों का कोमानन्द। वैदिक धर्म की उन्नति की।
७२	गोकर्ण	२८६७।१	३०६ । ६	२५३ । २	३१०	५७	वि॰ ६४ ई॰ पू॰, आ॰ अ॰ का करन।
७३	नरेन्द्रादित्य	२९०३।४	२५१ । ७	२६६।११	२५३	३६ । ३	वि॰ ४६ ई॰ पू॰, आ॰ अ॰ का नरेन्द्रावत, मुसल्मानों का नरानंद, नामांतर खिंखिल।
७४	अन्धयुधिष्ठिर *	२९३७।४	२१५ । ४	२७९	२१६ । ९	३४	वि॰ २८ ई॰ पू॰ अन्धसंज्ञा कमती सूझने से हुई, विषयी था, अन्त में राज्य छोड़कर भाग गया।
७५	प्रतापादित्य	२९६९।४	१८७ । ३	२८७ । ६	१८८ । ९	३२	वि॰ १० ई॰ पू॰, किसी विक्रमादित्य का नातेदार था। मुसल्मानों के मत से नाम बरतपात है और मालवा से वहां जाकर राजा हुआ।
७६	जलौक (२)	३००१।४	१३५ । ३	३०३ । ६	१३६ । ९	३२	वि॰ २२ ई॰ सन्, आ॰ अ॰ का जगुह।
७७	तुंजीन *	३०२९।४	१०३ । ३	३१९ । ६	१०४ । ९	२६	वि॰ ५४ ई॰, मुसल्मानों ने इसका नाम शचीनर और इसकी रानी का नाम दक्षिणा लिखा है। नामांतर वंजीर। बड़ा भारी काल पड़ा खज़ाना सब गरीबों को बांट दिया। आकाश से लोगों के घर में कबूतर गिरे। बड़ा धर्मात्मा था। चन्द्रक कवि ने नाटक काव्य बनाए।
७८	विजय	३०३५।४	६७ । ३	३३८ । ६	६६ । ९	८	वि॰ ९० ई॰, नामांतर वेजिरी। मुसल्मानों का विजयमल्ल।
७९	जयेन्द्र *	३०७२।४	५९ । ३	३४१ । ६	६० । ९	३७	वि॰ ९८ ई॰, नामान्तर चन्द्र। मुसल्मानों का विजयेन्द्र।
८०	सन्धिमान *	३११९।४	२२ । ३	३६९	२३ । ९	४७	नामांतर आर्यराज। जयेन्द्र का मंत्री था। इसके विषय में यह विचित्र बात प्रसिद्ध है कि फांसी पड़कर मरकर फिर जिया था। मुहम्मद अज़ीम ने अपने फारसी इतिहास में लिखा है कि जिस समय सन्धिमान शूली पर मरगया उसी काल में राजा

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिंहम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन।
							भी मर गया। तब प्रजा लोगों ने सन्धिमान मन्त्री के पुत्र अरिराय को राज पर बैठाया और इस भांति सन्धिमान के कपाल का लिखा पूरा हुआ। अरिराय बिरागी हो कर जंगल में चला गया। फिर युधिष्ठिर का पोता गोपाल राजा जो बड़ाही सुन्दर था राजा हुआ। अपने ससुर ख़ता के बादशाह की मदद से कश्मीर का राजा हुआ था और सूरत तक जीता।
८१	मेघबाहन	३१५३।४	२४।३ ई॰ सन	३८३	२३।३ ई॰ सन	३४	गान्धार (कन्दहार) का था। वहां के राजा गोपादित्य ने इसको पाला था। बौद्धों को बसाया।
८२	श्रेष्ठसेन	३१८३।४	५८।३	४००	५७।३	३०	मुसल्मानों के अनुसार खता के बादशाह की बेटी इसको व्याही थी। इसने प्रत्यक्ष पशु से घृणा करके पिष्ट की चाल चलाई। रुपये को दीनार कहते थे। आईने अकबरी का मेगदहन।
८३	हिरण्य * (२)	३२१३।६	८८।३	४१५	८७।३	३०।२	तोरमान कुमार का प्रतिद्वंदी था। मुसल्मानों ने लिखा है कि इसका भाई पुरबाहन इस का मंत्री था।
८४	मातृगुप्त *	३२१७।३	११७।११	४३०	११८।५	४।६	विक्रमादित्य ने उज्जैन से भेजा। जाति का ब्राह्मण था। इस विक्रमादित्य का नाम हर्ष था। उसकाल में लोग ललाट में तृशूल की मुद्रा देते थे। किन्तु कालिदास वाला विक्रम यह नहीं है।
८५	प्रबरसेन	३२७७।३	१२३।८	४३२।६	१२२।२	६०	यह प्राचीन वंश का था। शीलादित्य नामक गुजरात के राजा से लड़ा। मुसल्मानों के अनुसार पुरबाहन का बेटा था। श्री-

							नगर फिर से बसाया। मुसल्मानों ने शीलादित्य को विक्रमादित्य का बेटा लिखा है।
८६	युधिष्ठिर (२)	३३१६।३	१८३।८	४६४	१८५।२	३६	मुसल्मान लेखकों से यहां बड़ा भेद है· वे लिखते हैं प्रबरसेन का बेटा चन्द्रश्री। उसने ७३ बरस ३ महीना राज्य किया। उसका बेटा लक्ष्मण। राज्यकाल ३ बरस। उसका बेटा जयादित्य।
८७	नरेन्द्रादित्य	३३१६।११।१३	२०४।११	४८३	२२४।५	०।८।१३	इसी का नामान्तर कोई लक्ष्मण मानते हैं वा नन्द्रावत।
८८	रणादित्य	३६१६।११।१३	२१७।११	४६०	२३७।५	३००	इसका राज्यकाल ग्रन्थ में तीन सौ बरस लिखने से अनुमान होता है कि इसके पीछे के कुछ राजाओं के नाम छूट गए हैं। चोलराज की बेटी ब्याही। मुसलमानों ने लिखा है कि महात्मा मुहम्मद इसी के समय में उत्पन्न हुए थे और इसको राज्य करते जब २५८ वर्ष बीते थे तब वह मक्के से मदीने गए अर्थात् सन हिजरी आरम्भ हुआ।
८६	विक्रमादित्य	३६५६।११।१३	५१७।११	५५५।६	५३७।५	४२	
६०	बालादित्य *	३६६६।११।१३	५५६।११	५७६।६	५७६।५	३७	गोनर्दवंश का अन्तिम राजा। मुसल्मानों का जयानन्द। मुसल्मान लेखकों ने लिखा है कि उपलास नामक एक बड़ा पंडित इस के समय में हुआ। इसके पास पचीस हज़ार खासेके घोड़े और तीन लाख सवार और रात को प्रकाश करनेवाले लाल थे। मुसल्मानों के अनुसार पहले इस का बेटा चन्द्रानन्द फिर उसका भाई रबाजीत फिर उससे छोटा अलतादित गद्दी पर बैठा।
६१	दुर्लभवर्धन	३७३२।११।१३	५६७।३	५६४।६	६१५।५	३६	नामांतर प्रज्ञादित्य। कर्कोटक वंश का। यज़्दिजिर्द (Yezdejerd) का समकालीन।
६२	प्रतापादित्य (२)	३७८२।११।१३	६३३।३	६३०।६	६५१।५	५०	नामांतर दुर्लभक।
६३	चन्द्रापीड़	३७६१।७।१३	६८३।३	६८०।६	७०१।५	८।८	नामान्तर चन्द्रानन्द। बहुत धर्मिष्ठ था इसके समय में भी क्षमाविक्रम नाम का कोई राजा था।

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिंङ्हम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन।
९४	तारापीड़	३७९५।८।७	६९१।११	६८९।२	७१०।१	४।०।२४	मुसल्मानों का रबाजीत।
९५	ललितादित्य	३८२२।३।१८	६९५।११	६९३।२	७१४।१	२६।७।११	चमार की एक झोपड़ी मन्दिर में पड़ती थी। वह नहीं देता था। राजा ने स्वयं उस को राजी किया। कन्नोज के यशोवर्म से लड़ा। खता और खुतन तथा बुखारा गुजरात तिब्बत बंगाल तक जीता। बड़ा प्रतापी था। पृथ्वी में से राम लक्ष्मण की मूर्ति मिलीं उनकी प्रतिष्ठा की। सनद और सुलहनामा लिखने की चाल थी। शाहि शब्द सर्दार वाचक था। भवभूति महाकवि इसीके समय में था। इस समय में देवताओं के भीतर द्रव्य भी रहता था। राजा लोग जैन मत वालों का भी आदर करते थे।
९६	कुवलयापीड़	३८२३।४।३	७३२।७	७२९।९	७५०।८	१।०।१५	
९७	वज्रादित्य *	३८३०।४।३	७३३।७	७३०।९	७५१।८	७	मुसल्मानों से गुलाम बेंचने को चाल सीखी। मुसल्मानों ने ललितादित्य का बेटा रमा वा रणानन्द उस का पुत्र सगरानन्द या शकानन्द राजा हुआ यह क्रम लिखा है और इसके पीछे ललितादित्य का छोटा लड़का प्रहस्त गद्दी पर बैठा। ३१ वर्ष इन तीनों ने राज्य किया। इस्के पीछे विजयानन्द ४ वर्ष राजा रहा फिर ३ वर्ष सगरानन्द का बेटा रतिकाम

							राजा रहा। और फिर २ वर्ष असदानंद राजा हुआ करकोटक वंश का यह अंतिम राजा था। इस वंश में २००० वर्ष ५ महीना २० दिन राज्य रहा और जब वह वंश समाप्त हुआ तब हिजरी सन् २०९ था।
९८	पृथिव्यापीड़	३८३४।५।३	७४० । ७	७३७। ९	७५८। ८	४। १	
९९	संग्रामापीड़	३८३४।५।१०	७४४ । ८	७४१। ११	७६२। १०	०।०।७	
१००	जज्ज *	३८३७।५।१०	७५१ । ८	७४८। ११	७६९। १०	३	जज्ज जयापीड़ का साला था। जब जयापीड़ परदेस गया तब वह राज्य पर बैठ गया।
१०१	जयापीड़	३८६८।५।१०	७५४ । ८	७५१। ११	७७२। १०	३१	गौरदेश के जयंत राजा की बेटी व्याही। गुजरात राजा भीमसेन को जीता। विद्या का प्रचार किया। (८४१) महाभाष्य की पुस्तक मंगाई। क्षीर और उदभट पंडित तथा मनोरथ शंखदत्त चटक सन्धिमान और बामन इत्यादि इसकी सभा के कवि थे। द्वारका का नगर बसाया और मूर्त्ति स्थापना की। तांबे के दीनार अपने नाम के चलाए। उस समय नेपाल का राजा अरमुड़ि था। शम्भुकवि ने भुवनाभ्युदय नामक काव्य मम्म और उत्पल की लड़ाई का बनाया। इसका नामांतर विजयादित्य था। लोग गंजों में टिकते थे।
१०२	ललितापीड़	३८८०।५।१०	७८५ । ८	७८२। ११	८०३। १०	१२	नामान्तर पृथिव्यापीड़।
१०३	संग्रामापीड़ (२)	३८८७।५।१०	७९७ । ८	७९४। ११	८१५। १०	७	नामान्तर चिप्पटजय। वेश्यापुत्र था। इसके पांच भाइयों ने इस के नाम से राज चलाया।
१०४	वृहस्पति *	३८९९।५।१०	८०४ । ८	८०१। ११	८२२। १०	१२	इन्हीं लोगों ने राज्य पर बैठाया।
१०५	अजितापीड़	३९३५।५।१०	८१६ । ८	८१३। ११	८३४। १०	३६	
१०६	अनंगापीड़	३९३८।५।१०	८५२ । ८	८४९। ११	८७०। १०	३	
१०७	उत्पालपीड़ *	४९५९।५।१०	८५५ । ८	८५२। ११	८७३। १०	३१	कर्कोटकवंश का अन्तिम राजा।

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिङ्हम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन ।
१०८	आदित्यवर्मा	४९९६।५।१०	८५७।८	८५४।११	८७५।१०	२७	नामान्तर अवन्तिवर्मा । बड़ा काल पड़ा । बहुत से इतिहासवेत्ताओं का निश्चय है कि जालन्धर के यादव राजाओं से इसका वंश निकला है । मुसल्मानों ने लिखा है कि यह सखतवर्मा (शक्तिवर्मा) का पुत्र था और अपने रिश्तेदार शिववर्मा मंत्री की सहायता से गद्दी पर बैठा । इस्का राज्य अठाईस बरस तीन महीना तीन दिन ।
१०९	शंकरवर्मा	४०१४।५।१०	८८६।८	८८३।२	९०४।१	१८	गुर्ज्जर और भोज से लड़ा । बड़ा उद्धत था । नामान्तर श्रीवर्मा या शिववर्मा । मु॰ राज्यकाल १७ बरस ७ महीना १९ दिन ।
११०	गोपालवर्मा	४०१६।५।१०	९०४।८	९०१।१०	९२२।९	२	जवानी में मारा गया । इसका मंत्री प्रभाकरदेव बड़ा लोभी था । इसने अपने जामाता लकुज को शाहराज की पदवी देकर बड़े पद पर पहुंचाया किन्तु यही पीछे से राजा मंत्री दोनों की मत्यु का कारण हुआ ।
१११	शंकटवर्मा *	४०१६।६।०	९०६।८	९०३।१०	९२४।९	२० दिन	वर्मवंश का अन्तिम राजा । मुसल्मानों के मत के अनुसार यह गोपालवर्मा का वास्तविक भाई नहीं था मुंहबोला भाई था ।
११२	सुगन्धारानी	४०१८।६	९०६।९	९०३।१०	९२४।९	२	पार्थ को राज्य पर बैठाया । शंकरवर्मा की स्त्री थी ।
११३	पार्थ	४०२८।६	९०८।८	९०५।१०	९२६।९	१०	तातारी और एकांग जाति ने उपद्रव किया । निर्जितवर्मा का पुत्र था ।
११४	निर्जितवर्मा	४०३६।६	९२४।९	९२०।१०	९४१।९	८	पंगु था ।

११५	चक्रवर्मा	४०५० । ६	९२५ । ९	९२१ । १०	९४२ । ९	१४	जातियुद्ध हुआ। राजचक्र में बड़ा गड़बड़ हुआ।
११६	सुरवर्मा या शूरवर्मा	४०५१ । ६	९३६ । ९	९३७ । १०	९५२ । ९	१	मुसलमानों का शिववर्मा।
११७	पार्थवर्मा	४०५६ । ६	९३७ । ९	९३२ । १०	९५३ । ९	५	फिर से गद्दी पर बैठा।
११८	चक्रवर्मा	४०५६ । ६	९३८ । ९	९३३ । ४	९५४ । ३	०	फिर से बैठा।
११९	शंकरवर्धन	४०५६ । ६	९३९ । ३	९३३ । १०	९५४ । ८	०	राजतरंगिणी में इसका नाम नहीं है। मुसल्मानों ने इसका नाम शंकरदास लिखा है और लिखा है यह बड़ा ही क्रूर था।
१२०	चक्रवर्मा	४०५६ । ६	९३९ । ७	९३५ । ४	९५६ । ३	०	तीसरी बेर गद्दी पर बैठा।
१२१	उन्मत्तवर्मा	४०५८ । ६	९३९ । ११	९३६ । ८	९५७ । ७	२	अवन्तिवर्मा नामान्तर।
१२२	शूरवर्मा (२) *	४०५९ । ६	९४१ । ११	९३८ । १०	९५९ । ८	१	
१२३	यशस्करदेव (तथा वर्णट)	४०६८ । ६	९४२	९३९	९६०	९	इसके पीछे वर्णट ने ६ दिन राज्य किया। प्रभाकरदेव का पुत्र था। बड़ाही उत्तम राजा हुआ है। अन्त में फ़कीर हो गया। कहते हैं कि मम्मट इस समय में था। मुसल्मान लेखकों ने लिखा है कि संग्रामदेव का लड़का अमान था इसको इस की मा ने मारडाला। उसका पुत्र एक बरस राज करके दादी के डर से फ़कीर हो गया। फिर तृभुवनगुप्त और बहमन (भीमगुप्त) गद्दी पर बैठे पर इनकी दादी ने इनको मारडाला। फिर विग्रहदेव राजा हुआ। यह दिद्दा का भतीजा था। इस को भी नृसिंहराय नामक दिद्दा के साधक वज़ीर ने मारडाला।
१२५	संग्रामदेव *	४०६९	०	९४८	९६९	० । ६ । ०	पर्वगुप्त ने मारडाला।
१२६	पर्वगुप्त	४०७० । ४	९५१	९४८	९६९	१ । ४	सुरेश्वरी क्षेत्र में मारा गया।
१२७	क्षेमगुप्त	४०७४ । १०	९५२	९५०	९७१	४ । ६	बौद्धों के बहुत से बिहार तोड़ डाले। किसी के मत से आठ बरस।
१२८	अभिमन्युगुप्त	४०८८ । ८	९६१	९५८	९७९	१३ । १०	
१२९	नन्दिगुप्त	४०८९ । ९	९७५	९७२	९९३	१ । १	इसकी दादी दिद्दारानी ने इसको मारडाला।
१३०	तृभुवनगुप्त	४०९४ । ९	९७६	९७३	९९४	४	तथा।

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिंहम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन।
१३२	भीमगुप्त *	४०९९ । ३	९७८	९७५	९९६	५	ध्रुवाचार्य और पिचुल पंडित इसकी सभा में थे। कालिदास तथा श्रीहर्षादि कवि और एक विक्रम भी इसी के समय में थे। अर्थात् इस समय से हर्ष के राज्यारम्भ तक कवियों के उदय का काल था।
१३३	दिद्दा	४१२२।३	९८२	९८०	१००१	२३	पूर्वोक्त तीनों को मारकर राज पर बैठी।
१३४	संग्रामदेव	४१४६।३	१००६।३	१००३।६	१०२४।७	२४	इसके काल में हम्मीर नामक तुर्क ने चढ़ाई की और हार पाई।
१३५	हरिराज और अनन्तदेव	४१९९।१।७	०	१०२८	१०३२	५२।४।७	सोमदेव ने वृहत्कथा में अनन्त का पिता संग्रामदेव लिखा। हरि ने २२ दिनमात्र राज्य किया था फिर अनन्त राजा हुआ अनन्त ने फौज के लोगों को एक बेर ९२ करोड़ कश्मीरी रुपया बांटा था।
१३६	कलश	४२०१।२।७	०	१०८०	१०५४	८।१	मुसल्मानों का गुलशन। विल्हण ने अपने विक्रमांक चरित में इसकी बड़ी स्तुति लिखी है। इसकी माता का नाम सुभटा और मामा का नाम लोहराखण्डल क्षितिपति था। ये लोग वैष्णव उदार और पण्डित थे।
१३८	उत्कर्ष और हर्ष *	४२०७।३	०	१०८८	१०६२	०।०।२३	विल्हण ने इनका एक भाई विजयमल्ल नामक और लिखा है। सोमदेव ने वृहत्कथा इसी के समय में बनाई और लेखकों के मत से इसने १२ वर्ष राज्य किया था। चालुक्य वंश में एक विक्रम इस समय भी था। और लेखकों का मत है

							कि यह पिता पुत्र भाई सब एक काल में जुदा जुदा राज्य बांट कर करते थे। मुसल्मानों ने लिखा है कि १२०० मशालें नित्य इसकी सभा में बलती थीं। और बड़ाही न्यायी था।
१३९	उदयन विक्रम *	४२५४।७।२	०	११००	१०६२	१०।४।२	हर्ष से राज्य पाया। नामान्तर उद्दाम विक्रम वा उच्चल। मुसल्मानों का बाजिल।
१४०	शंखराज	४२१७।७।२	०	११००	१०५२	०	उच्चल को मारकर राजपर बैठा। नामान्तर रड्डु। इसको उज्वल के भाई सुस्सल ने मारडाला। मुसल्मानों ने इस का नाम ट्टैन लिखा है।
१४१	सल्ह	४२१७।८।२२	०	१११०	१००२।०	१।२२	इन राजाओं के समय में बड़ी लड़ाई हुई। मुसल्मानों ने इस का नाम असस और इसके भाई का नाम एजिल लिखा है।
१४२	सुसल्ह	४२३३।८।२२	०	११११	१०७२	१६	मल्लदेव का छोटा बेटा उच्चल का भाई।
१४३	भिक्षाचर *	४२३४।२।२२	०	११२७	१०८८	०।६।०	
१४४	जयसिंहदेव	४२५६।२।२२	०	११२७	१०८८	२२	मुसल्मानों का जैनक। मुसल्मानों ने इस के राज्य का अन्त ५३५ हिजरी में लिखा है। राजतरंगिणी बनी। शाके १०७० में यहां तक पूरा हिसाब करने से गतकलि ईसवी हिजरी संबत शाका सब दस पंदरह बरस के हेर फेर में ठीक हो जाते हैं।
१४५	परमान	४२६५।८।२२	०	११४९	११९०	९।६	
१४६	वन्तिदेव	४२७२।८।२२	०	११५९	१११९	७	
१४७	वोप्यदेव	४२८१।८।२२	०	११६६	११२६	९	
१४८	जस्सदेव	४३०६।८।२२	०	११७५	११३५	२५	वोप्यदेव का भाई था। खब्ती था। किसी के मत से १८ बरस।
१४९	जगदेव	४३२०।८।२२	०	११९३	११७३	१४	
१५०	राजदेव	४३४३।८।२२	०	१२०८	११६७	२३	
१५१	संग्रामदेव	४३५९।८।२२	०	१२३१	११९०	१६	
१५२	रामदेव	४३८०।९।२२	०	१२४७	१२०६	२१।१	

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिङ्हम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन।
१५३	लक्ष्मणदेव*	४३८३।३।२४	०	१२६८	१२२७	३।४	
१५४	सिंहदेव*	४३९८।७।२४	०	१२८१	१२६१	१४।४	
१५५	सिंहदेव (२)*	४४१७।७।२४	०	१२९२	१२७०	१९	
१५६	श्रीरिंछण *	४४२०।४।२४	०	१३१८	१२९४	३।२	द्रायर के मत से नाम उदयदेव। भोटवंश का।
१५७	कोटारानी	४४३७।७।२४	०	१३३४	१२९४	१६।१	रिंछन सुलतान के काल में द्वितीय कालस्वरूप दुल्लच नामक मुग़ल ने (जो न मुसल्मान था न हिन्दू) कश्मीर में प्रवेश कर के वहां के नगर मन्दिर अट्टालिका बगीचा सब निर्मूल कर दिया और मनुष्यों को घास की भांति काट कर देश उजाड़ कर दिया। मानों आर्यों का राज्य नाश होता है यह समझ कर ईश्वर ने कश्मीर की प्राचीन शोभा ही शेष नहीं रक्खी। फिर कोटारानी के साथ उसके पालित दास शाहमीर ने विश्वासघात और कृतघ्नता करके अपने को राजा बनाया। और कोटा से विवाह करने को बिचारी को तंग किया। पहले कोटा भागी किन्तु पकड़ आने पर व्याह करना स्वीकार किया। व्याह की महफ़िल सजी गई। जब दुलहिन शृंगार कर के निकाह पढ़ाने आई साथ में कटार छिपाकर लाई। ठीक विवाह के समय कटार पेट में मारकर मर गई। अंत समय कहा 'ले बिश्वासघातक जिस शरीर को तू चाहता है यह

							तेरे सामने है'!!! हिन्दुओं का राज्य इसी के साथ समाप्त हुआ। कुछ कम चार हज़ार बरस आर्य लोगों ने कश्मीर का भोग किया।
१५८	शाहमीर	४४४१।०।२४	०	१३३४।६।१०	०	३।५	नामान्तर शमसुद्दीन।
१५९	जमशेद	४४४२।११।२४		१३३७।५		१।११	
१६०	अलाउद्दीन	४४५४।११।२४		१३३९।४		१२	
१६१	शहाबुद्दीन	४४७२।११।२४		१३५२।०।२३		१८	
१६२	कुतुबुद्दीन	४४८८।११।२४		१३७०।०।२३		१६	
१६३	सिकन्दर	४५१२।११।२४		१३८६।०।२३		२४	तैमूर का आना। यह ऐसा कट्टर मुसल्मान था कि केवल कश्मीर के प्राचीन मन्दिर ही नहीं तोड़े आप ने सारे कश्मीरमंडल में संस्कृत के जितने ग्रन्थ मिले सब को दीवार की नेव में डाल दिया!!! हा! आज वे ग्रन्थ होते तो न जाने क्या क्या बात हम लोग जानते।
१६४	अलीशाह	४५१९।११।२४		१४१०।०।२३		७	फ़क़ीर होकर मक्के चला गया। कोई कहता है कि जैनलाबदीन की क़ैद में मरा।
१६५	जैनलाबदीन	४५१९।११।२४		१४१७।०।२३		५०	नामान्तर बडुशाह वा शाहीख़ां। पंचाइत की अदालत (Local Self-Government.) जारी किया।
१६६	हैदरशाह	४५७१।११।२४		१४६७।०।२३		२	बड़ा विषयी था। दीवार के नीचे दब कर मर गया।
१६७	हसन	४५८३।११।२४		१४६९।०।२३		१२	बड़ा विषयी था।

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ड्रायर के मत से समय	कनिङ्हम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन ।
१६८	मुहम्मद	४५८५।११।१४	०	१४८१। ०।२८	०	२	
१६९	फतहशाह	४५९६।११।१४		१४८३। ७।२८		११	
१७०	मुहम्मद (२ बेर)	४६२७।११।२४		१४९१। ७।२८		३१	
१७१	फतह (२ बेर)	४६४६।११।२४		१५१३।५।७		२२	
१७२	मुहम्मद (३ बेर)	४६५०।११।२४		१५१४।५।७		१	
१७३	फतह (३ बेर)	४६५३।११।२४		१५१७।५ ७		३	
१७४	मुहम्मद (४ बेर)	४६५६।११।२४		१५२०।५।७		३	
१७५	नाजुकशाह	४६६४		१५२७।५।७		७	
१७६	मुहम्मद (५ बेर)	४६६७		१५३०।५।७		३	
१७७	नाजुकशाह (२ बेर)	४६७४		१५३७।५।७		७	शमशुद्दीन, इस्माइलशाह, इबराहीमशाह, हबीबशाह, अली-शाह और ग़ाज़ीशाह इतने बादशाहों के नाम यहां भिन्न भिन्न तवारीखों में और मिलते हैं ।
१७८	मिरज़ाहैदर	४६७८		१५४१।५।७		४	शीओं को बड़ी दुर्दशा से मारा। नाजुकशाह के नाम से राज्य करता रहा ।
१७९	हुमायूं	४६७८		०		०	बीच में हुमायूं के समय से उस के मरने तक कामरां का

							कश्मीर में आना और उपद्रव करना और अनेक उपद्रवों में २५ या ३० वर्ष काल नष्ट हुआ।
१८०	ग़ाज़ीशाह	४६८६				११	मुसल्मानों के मत से नौ बरस। राजावली में ६ वर्ष और लोगों का राज्य स्फुट रहा ऐसा लिखा है।
१८१	हुसैनशाह	४६९५				६	
१८२	अलीख़ां आदिल शाह	४७०४				९	
१८३	यूसुफ़शाह *	४७०५				१	
१८४	सैयद मुबारकख़ां	४७०६				१	
१८५	लोहरशाह	४७०६				० । २	राजावली में लोहर के पुत्र याकूब का राज्य एक वर्ष लिखा है।
१८६	यूसुफ़शाह (२ बेर)	४७०९				३	
१८७	याकूबशाह	४७१०				१	राजा भगवानदास से लड़कर अपने नाम का सिक्का जारी किया।
१८८	हुसैनशाह *	४७१०				०	
१८९	शमसीचक *	४७११				०	
१९०	अकबर	४७३०				१९	१५८३ में अकबरने कश्मीर लिया। इस प्रसिद्ध और बुद्धिवान बादशाह की कहानी संसार में प्रसिद्ध है।
१९१	जहांगीर	४७५२				२२	सन् १६०५ में तख़्त पर बैठा १६२७ ई० में मरा।
१९२	शाहजहां	४७८३				३१	१६२८ में तख़्त पर बैठा १६५९ में औरंगज़ेब ने क़ैद किया १६६४ में मरा।
१९३	औरंगज़ेब	४८३१				४८	१७०७ में मरा।
१९४	मुअज़्ज़मबहादुर शाह शाह आलम	४८३६				५	औरंगज़ेब के पीछे मुसल्मानों का राज्य शिथिल होगया इससे कई बादशाह हुए। सब नाम यथाक्रम लिए जायं तो पहले आज़िम फिर मुअज़्ज़म, जहांदारशाह, फ़र्रुख़सियर, रफ़ीउल-

राज संख्या	नाम राजाओं के	गत कलि	ट्रायर के मत से समय	कनिंघम के मत से समय	विलसन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन।
							दरजात, रफ़ीउलदौलत, नकोसीर, मुहम्मदशाह, इब्राहीम-शाह, अहमदशाह, आलमगीरसानी, शाहजहान, शाहआलम, बदरबख़्त अकबरसानी और बहादुरशाह येनाम होंगे।
१९५	जहांदारशाह	४८३७				१	
१९६	फ़र्रुख़सियर	४८४३				६	
१९७	मुहम्मदशाह*	४८६३				२०	१७१९ में तख़्त पर बैठा।
१९८	नादिरशाह*	४८७८				१५	सन ११५१ हिजरी में नादिरशाह का ख़ुतबा कश्मीर में पढ़ा गया। किन्तु नादिर के मरने पर कश्मीर फिर कुछ दिन गड़बड़ में रहा। ११६१ हिजरी में अहमदशाह के वज़ीर असमतुल्लीनख़ां ने चढ़ाई की थो पर हार गया।
१९९	अहमदशाह*	४८७९				१	११६६ हिजरी में पूरी तरह पर कश्मीर अहमद के अधिकार में आया।
२००	राजासुखजीवन*	४८८७				८	इसने बाग़ी होकर आठ वर्ष चार महीने राज्य किया।
२०१	अहमदशाह(२बे)	४८९६				९	११७५ हिजरी में फिर अहमदशाह की सैना ने जीता। महानन्द पंडित और कैलाश पंडित नामक इसके दीवानों ने प्रबन्ध किया। ११७९ में बड़ी बड़ी लड़ाई हुई।
२०२	तैमूरशाह*	४९२०				२४	११८४ में गद्दी पर बैठा। ३ महीने बड़ा भूकंप हुआ। पहले वज़ीर ने बड़ा उपद्रव किया बहुत से लोग जल में डुबा

							दिए। तब पंडित दिलाराम नामक बड़ा बुद्धिमान यहां का सूबा हुआ। यह बड़ा बुद्धिमान था। अन्त में पहले वज़ीर के बेटे को फिर सूबेदारी मिली और इस ने भी बाप की भांति महा अनर्थ किया।
२०३	ज़मांशाह	४६४६				२६	१२०८ हिजरी में गद्दी पर बैठा। दीवान नन्दराम कश्मीर का सूबेदार हुआ।
२०४	सुलतान महमूद					०	इन दोनों के काल का विशेषवृत्त नहीं ज्ञात हुआ। ज़मांशाह के २६ वर्ष में इन दोनों का भी समय समझना चाहिए।
२०५	शाह शुजा *					०	महाराज रणजीतसिंह ने कोहनूर हीरा इसी से लिया था।
२०६	महाराज रणजीतसिंह	४६४६				२०	१२३४ हिजरी अर्थात् १८१८ ईसवी १८७५ संवत् में कश्मीर जीता। कश्मीर जीतने की तारीख़। بولوجي واه گروجي كا خالصه بولوجى واه گوروجي كي فتح
२०७	महाराज खड्गसिंह	४६४७				१ | ४	१८६६ संवत में महाराज रणजीतसिंह मरे और ये राज पर बैठे।
२०८	कुंअरनौनिहालसिंह	४६४७				० | ० | १	ये अपने पिता की क्रिया करके आए उसी समय पत्थर के नीचे दबकर मर गए।
२०९	महाराज शेरसिंह	४६५०				३	इन को सिंधांवालों ने मारडाला।
२१०	महाराज दलीपसिंह *	४६५२				२	बालक अवस्था में नाममात्र को राजा थे। अब बिलायत में पिनशिन पाते हैं।
२११	राजराजेश्वरी विक्टोरिया*	४६५२				० | ० | ७	सन् १८४६ ईसवी सम्बत् १९०२ में सर्कार ने पंजाब जीता। सात दिन मात्र कश्मीर सर्कार के अधिकार में रहा।
२१२	महाराज गुलाब सिंह	४६६३				११	१८४६ ईसवी के १६ मार्च को सर्कार से कश्मीर इन्होंने पाया।

राज संख्या	नाम राजाओं के	मत कौल	ह्वायर के मत से समय	कनिंङहम के मत से समय	विल्सन के मत से समय	राज्यकाल	विशेष वर्णन।
२१३	महाराज रणबीरसिंह	४९७०					सं· १९१४ में महाराज गुलाबसिंह के मरने पर ये राजा हुए अब कश्मीर का रक़बा २५००० और आमदनी ५०००० समझी जाती है।

इस ग्रंथकर्त्ता के पिता श्रीयुक्त कविवर गिरिधरदासजी ने अपने
जरासन्धवध नामक महाकाव्य में जरासन्ध की सेना में
कश्मीर के आदि गोनर्द्द के वर्णन में एक छन्द
लिखा है वह भी प्रकाश किया जाता है
(ज॰व॰म॰का॰ ३ सर्ग ४० छन्द १७ पत्र)।

चलेउ भूप गोनर्द्द वर्द्दवाहन समान बल,
संग लिए बहु मर्द्द सर्द्द लखि होत अपर दल।
फेंटा सीस लपेटा गल मुकता की माला,
सिर केसर को पुंड्र धरे पचरंग दुसाला।
रथ चारु जराऊ सोहतो रूप सबन मन मोहतो,
कसमीर भूप भरि रिसि लसो मथुरापुर दिसि जोहतो॥

(*A short account of Babu Harischandra, the author of this work. Written by Babu Ramasankara Vyasa*).

The ancestors of the author of this work were very rich and much respected, holding high positions at Delhi and Gour Royal Durbars. They first settled in Gour (Lakhanouti in Bengal) and then at Rájmahal and Murshidábád. His great-grand-father Babu Fatehchanda Sáhu came to Benares and resided there. He had nine brothers, three of them were entitled Rajás ; one Ráy Bahádur and the rest Babus ; but only his great-grand-father had issue. He rendered very good services to the British Government and greatly assisted Judicial authorities in the discharge of their duties. Mr. Duncan was much obliged to him for his valuable services during the Permanent Settlement. Babu Harakhachanda was the only son of Babu Fatehchanda and the only heir to such an illustrious family of ten brothers. He was so popular in the country that his name is still sung in the family songs, lavanis, shair, etc. His name is well known in India as a famous Maháj an and man of generosity. Babu Gopálchandra was Babu Harakhachand's only son. He died at the early age of 27, and in the same short period he wrote forty works in Hindi and Sanskrit. He named himself Giridharadása in his works. He left two sons, the elder of these two is our eminent author and the younger Babu Gokulachanda. Our author was born on the 9th September 1850 A. D. His mother died when he was 5 years old and his reverend father left him totally an orphan at the age of 9. He was educated in the Queen's College, Benares, for a few years but the thorough knowledge which

he gained of Sanskrit, Persian and Bengali, was the result of his private study and his own genius. From his early age he used to compose Poetry and in 1864 at the age of only 14 his first Drama was published. He was an Honorary Magistrate and a Municipal Commissioner for four years. He lost no opportunity to come forward in showing loyalty to the Throne when Princes of the Royal Blood visited this country. His liberal hand supported good many poor country men at all public events. He started a paper Kavivachanasudhá, which is still in existence and two monthly magazines. If all the works which he has published in the said papers be collected their number will be more than three hundred. He has contributed not only to these three but to almost all the Hindi Journals and Periodicals. His liberality is so unlimited that for its sake he is often in trouble. A school in the midst of the city is existing as a good example of his liberality. He can read and write almost all the languages of India, Telgu and Tamil. His thoughts also are very liberal and that is the cause that he is not so much liked by the bigotted aristocracy. All Hindi Newspapers and leading Hindi and Sanskrit scholars of India have given him the title of Bháratendu (moon of India).

List of the Books compiled by Babu Harishchandra, published separately, Benares.

---

(1) Mudrárákshasa Nátaka (Translationof Sanskrita Drama, with commentary and a brief review of that period).

(2) Satya Harishchandra (an original Drama in Hindi).

(3) Kashmirakusuma (History of Kashmir).

(4) Karpuramanjari (from original Prákrita).
(5) Niladevi (original Drama).
(6) Vidyásundar (translated from a Bengálee Drama).
(7) Bhárata Durdashá (a farce).
(8) Bhárata Janani (a Drama).
(9) Bhárata Bíratva (a poem).
(10) Bhárata Bhikshá (a poem).
(11) Vijayini Vaijaya Vaijayanti (a poem).
(12) Dhananjay Vijay (from a Sanskrit Drama).
(13) Bhakti Sutra Vaijayanti (philosophy of faith).
(14) Nárada Sutra Bháshya (Do).
(15) Tadiya Sarvaswa (Do).
(16) Andhera Nagari (a farce).
(17) Madhu Mukula (a poem).
(18) Prema Taranga (a poem).
(19) Premáshru Varsana (a poem).
(20) Phulonkà Guchchhá (a poem).
(21) Prema Máliká (a poem).
(22) Prema Phulawári (a poem).
(23) Prema Mádhuri (a poem).
(24) Gita Gobindánanda (a poem from Jayadeva with his life).
(25) Prema Jogini.
(26) Prátas Smaraṇa Mangala Pátha.
(27) Utsawawali.
(28) Nátaka (teaches Drama writing and playing).
(29) Bhruṇa Hatyá.
(30) Hindi Prathama Vyákaraṇa.
(31) Mánalilá Phula-bujhauwal.
(32) Pancha Pavitratmá (lives of Mohmet, Fátimá, Ali, Hasan and Husain with dates of different Mohamadan Imáms.)

(33) Chakk Chakkawa Chakra (a brief sketch of the dates, &c., of Indian Kings).
(34) Gomahima.
(35) Satipratápa (a drama on chastity).
(36) Varsa Malika.
(37) Madhyanha Sarani.
(38) Tazirát Shouhar (Persian character).
(39) Witness on Education of India. (English).
(40) Jaina Kutuhala
(41) * Chamanistān Hameshabahár.
(42) * Sundari Tilaka.
(43) * Rasa Barasáta.
(44) * Gulazárpurbahár.
(45) * Nai Bahár.
(46) * Rámárya.
(47) Holi.
(48) * Sitá Rám Vivāh Mangal.
(49) Stotra Pancharatna.
(50) Offering of flowers to H. R. H. the Duke of Edinburgh.
(51) Mánasopayana to H. R. H. the Prince of Wales.
(52) Mano Mukulu Málá to H. E. M. the Empress of India.
(53) Louisa biwáha Varnana
(54) * Kajali, Malár, Hindolá Sangrah.
(55) † Hamirá Hatha (an original novel).
(56) † Nawa Mallıká (an original drama).
(57) † Bháratavarsha and Vaishnawism.
(58) † Ham Murti pujaka hain.
(59) † Sita bata Nirnaya.
(60) Chandráwali Nátaka (an original Drama).
(61) Sangita Sár (To teach music).
(62) * S'ri Rádha Sudhá Shatak.

(63) Lives of Vikrama and Bilhaṇa.
(64) * Urdhpundra Martaṇda.
(65) Bhakta Sarvaswa.
(66) Vaishnawa Sarvaswa.
(67) Vallabhi Sarvaswa.
(68) Yugula Sarvaswa.
(69) Vaidiki hinsá hinsa na-bhawati (Vaidic killing is not a killing).
(70) Pákhanda Vidambana.
(71) Delhi Darbár Darpaṇa.
(72) Kárttika Karma Vidhi.
(73) Karttika Naimittika Kritya.
(74) Baisakh Snána Vidhi.
(75) Magha Snána Vidhi.
(76) Purushottama Mása Vidhána.
(77) Margashirsa mahimá.
(78) Agarwálon ki Utpatti.
(79) Kárttika Snána (a poem).
(80) Prema Pralápa.
(81) Kálachakra.
(82) Bhangdarbhang.
(83) Rájakumár Biwáh barnana.
(84) Burhwá Mangal.
(85) Visasya visa moushadham Bhana.
(86) Sri Sitá Vallabha Stotra.
(87) Puraṇopakramaniká (or a key to 18 Puráns).
(88) Life of Suradás.
(89) Life of Rámánuja Swámi
(90) Uttarardha Bhaktamála
(91) * Satasayi Shringara.
(92) Origin of Khatris.
(93) Prema Sarowara.

(94) Parihásini.

(95) Ramáyan ká Samaya (Review of Válmiki's time).

Besides these his numerous compositions, translations and editions were published in the Kavivachanasudha, Harischandra's Magazine and Bálabodhini.

Books marked * in this list are not his own works but edited by him.
Books marked † are unpublished.